ISSN 2278-8808
An International Peer Reviewed
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

पत्राकारिता के विविधप्रकार

डॉ. विश्वप्रभा

हिन्दी विभागाध्यक्ष,डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़,यमुनानगर ।

कला, साहित्य, काल, इतिहास के अंधेे—उजालों के बीच पत्राकारिता सूर्य वीथि बनाती राष्ट्रीय लोक चेतना को उद्दीप्त करने का समर्थ माध्यम है । सम्यकहित में सम्यक प्रकाशन को पत्राकारिता कहा जा सकता है । प्रत्येक साहित्यकार एवं पत्राकार समसामयिक परिवेश से किसी न किसी रूप में प्रेरणा ग्रहण करता है । असत्य अशिव और असुन्दर पर सत्यं शिवं सुन्दरम् की शंख ध्वनि ही पत्राकारिता है । कहना न होगा साहित्य और पत्राकारिता जन जागरण की दो दिशाएं ही नहीं है अपितु जनकल्याण का अन्तिम लक्ष्य भी है ।

समाज के विचारों और साहित्य की संवाहिका है पत्राकारिता — जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना एक स्थान तो बना ही लेती है, साथ ही साथ उसका निर्माण भी करती है । जीवन की विविधता और नये—नये साध्नों के अविष्कार ने पत्राकारिता को बहुआयामी बना दिया है । वर्तमान काल क्योंकि विशिष्टीकरण का काल है अत: पत्राकारिता के क्षेत्रा में आने वाले पत्राकार अपनी रूचि और प्रवृत्ति के अनुसार अपने लिए विशिष्ट क्षेत्राों का चुनाव कर रहे है । फलस्वरूप पत्राकारिता के विभिन्न स्वरूप उभर कर सामने आ रहे हैं । उन स्वरूपों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर के देखा जा सकता है ।

अन्वेषणात्मक ;खोजी पत्राकारिताद्ध : अन्वेषणात्मक पत्राकारिता द्वारा समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार सम्बन्धी बातों के प्रकाशन द्वारा इन पर नियन्त्राण किया जाता है । उसमें पत्राकार अपनी प्रतिभा और तत्परता के बल पर शारीरिक जोखिम उठाकर गुप्तचर के रूप में कार्य करते हैं । इसके द्वारा समसामयिक विषयों, घटनाओं, गतिविध्यिों, स्थितियों एवं तथ्यों के क्रमब(सूक्ष्म सर्वेक्षण, अध्ययन और अनुसंधन के आधर पर चौंकाने वाले निष्कर्ष निकाले जाते हैं । अमेरिका का 'वॉटरगेट काण्ड' तथा भारत का 'कफन घोटाला' और 'बोफोर्स तोप काण्ड' खोजी पत्राकारिता के ज्वलन्त उदाहरण है । यद्यपि इस पत्रिाका का मूल उद्देश्य सामाजिक राजनीतिक जीवन में शु(ता होना चाहिए ।

आज के समय में जनमाध्यम एवं पत्राकारिता का क्षेत्रा इतना व्यापक एवं विस्तृत हो गया है कि इसमें अध्ययन अनुसंधन की सम्भावनाएँ बढ़ गई हैं । इन दोनों के अंतर को स्पष्ट करते हुए प्रवीण दीक्षित लिखते हैं — अन्वेषी पत्राकारिता और अनुसंधन पत्राकारिता में एक सबसे बड़ा अंतर यह होता है कि अन्वेषी पत्राकारिता में किसी घटना या स्थिति का विध्वित् योजनाब(वैज्ञानिक रूप से अध्ययन या अनुसंधन नहीं किया जाता, जबकि अनुसंधन पत्राकारिता में ऐसा करना अनिवार्य है ।

आर्थिक पत्राकारिता : अर्थ या पैसा जीवन का एक प्रमुख तत्व है । इसके बिना जीवन में कोई कार्य सि(नही होता । अत: ध्न से सम्बन्धित कार्यकलापों को उजागर करने के लिए आर्थिक पत्राकारिता का विशेष स्थान है ।

पूंजी बाजार, मुद्रा बाजार, राष्ट्रीय आय, पंचवर्षीय योजना, ग्रामोद्योग आदि से सम्बन्धित समस्त समाचार पाठकों को आकर्षित करते हैं । आज जब हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार बन गया है । आर्थिक पत्राकारिता के अनेक पत्रा 'व्यापार भारती', 'व्यापार केसरी', 'अर्थ चेतना', 'आर्थिक जगत', 'फाइनैंशिएल एक्सप्रेस', 'बैकिंग चिंतन', 'अनुचिंतन', 'दिव्यकुंज' इत्यादि द्वारा उस क्षेत्रा को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है ।

ग्रामीण पत्राकारिता : भारत ग्राम प्रधन देश है । भारत की अध्किांश जनता गांवों में बसती हैं । ग्रामीण पत्राकारिता पोषण, स्वास्थ्य कृषि उत्पादन सम्बन्धी तकनीक, परिवार—कल्याण तथा विकासात्मक गतिविध्यिों के बारे में जानकारी देने का महत्वपूर्ण साध्न है ।

आज कल्याणकारी पत्राकारिता के लिए यह आवश्यक है कि वह सही सूचना के प्रसारण और जन—प्रबोध्न के लिए ग्रामीण पत्राकारिता को प्रश्रय दे । 'ग्रामीण संस्कृति', 'ग्रामीण समाज शास्त्रा', 'ग्रामीण अर्थशास्त्रा', 'ग्रामीण प्रशासन' हरियाणा में 'चन्द्रदिवाकर' ;कुरूक्षेत्राद्ध तथा विकासशील मेवाड़ ;पलवलद्ध से के अतिरिक्त अनेक समाचारपत्रा हैं जिनमें आंशिक रूप से ग्रामीण आंचलिक गतिविध्यिों एवं विकास के समाचार होते हैं ।

यद्यपि ग्रामीण पत्राकारिता को अपनी सृजनकारी भूमिका को पहचानने की आवश्यकता है । इसे अपनी अनंत सम्भावनाओं का विकास करने एवं नए—नए आयामों को खोलने के लिए इस समय प्रयोगों और चुनौतियों के दौर से गुजरना होगा ।

कृषि पत्राकारिता के अन्तर्गत कृषि प्रसार, पशुपालन कृषि रसायन, कृषि अर्थशास्त्रा, शारीरिक और शास्त्रा विज्ञान आदि विषयों का अध्ययन आता है ।

विज्ञान पत्राकारिता : वैज्ञानिक पत्राकारिता इस वैज्ञानिक युग के लिए सर्वाध्कि महत्वपूर्ण है । इसका उद्देश्य है—पाठकों में वैज्ञानिक बोध् जागृत करना । ये पत्रिाकाएं विभिन्न वैज्ञानिक

नीतियों और उनकी व्यवहारिक कठिनाईयों की जानकारी देती है, साथ ही जन—साधरण को अन्धविश्वासों अर्थात् कालातीत खोजों से अवगत कराती है । इस पत्राकारिता के लिए प्रमाणिक पुस्तकों, पत्रा—पत्रिकाओं, पारिभाषिक शब्द—संग्रहों, सारांशों और डाटा बैंकों की आवश्यकता होती है । विज्ञान पत्राकारिता का क्षेत्रा बड़ा व्यापक है । 'विज्ञान मासिक', 'विज्ञान परिषद्', 'विज्ञान जगत', 'विज्ञान शिक्षक' तथा 'विज्ञान परिषद् इलाहाबाद' ये सभी अनुसंधन पत्रिकाएँ हैं ।

विज्ञान शब्द अपने आप में बड़ा व्यापक है । इसके अन्तर्गत सूचनातन्त्रा, ज्योतिष, जीवनशास्त्रा, वनस्पति शास्त्रा, गणित रसायन शास्त्रा, भौतिकशास्त्रा खगोल, भूगोल कृषि, तकनीक, सेना एवं मनोविज्ञान इत्यादि कई विषय आ जाते हैं ।

विकास पत्राकारिता : आर्थिक, वैज्ञानिक तथा सामाजिक आदि क्षेत्रों के बारे में रचनात्मक लेखन को विकास पत्राकारिता के रूप में माना जा सकता है ।

पत्राकार का मुख्य कार्य अपने पाठकों को तथ्यों की सूचना देना ही पर्याप्त नहीं, उनका प्रसार भी आवश्यक है । वर्तमान पत्राकारिता इसे सि(न्ततः स्वीकार करती हुई भी नकारवादी हो गई है । भारत में पिछले चार दशकों के राजनीतिक छल—छद्म और अर्थ क्षेत्रा के अपराधीकरण के कारण जन—जन में यह भाव घर कर गया है कि अपने विकास के लिए सब कुछ करना जायज है । इस मनःस्थिति को विकास पत्राकारिता के माध्यम से ही नियन्त्रित किया जा सकता है । वस्तुतः विकास पत्राकारिता का ध्येय है विभिन्न राष्ट्रीय—अन्तर्राष्ट्रीय योजनाओं की प्रगति से अवगत कराना । हमारे देश में विकास योजनाओं के परिणामस्वरूप व्यक्तिगत आय, साक्षरता, दीर्घजीवन आदि में वृ(हुई है । इसका संकल्प हो—फ्हम बनाए कुछ बेहतरय् तभी यह पूर्ण सार्थक होगी । केन्द्र एवं प्रांतीय सरकारें अपने विकास कार्यक्रमों का संदेश जनता तक पहुंचाने के लिए पत्रा प्रकाशित करती हैं । इस सन्दर्भ में केन्द्रीय सरकार की 'विकास पत्रिका—योजना' का नाम लिया जा सकता है ।

फोटो पत्राकारिता : फोटो पत्रिकारिता में समाचारों का दृश्यात्मक चित्राण प्रसारित किया जाता है । समाचार से सम्बन्ध्ति चित्रा एकत्रित कर उन्हें उपयुक्त शीर्षक देने की कला फोटो पत्राकार के लिए जरूरी है । शीर्षकयुक्त चित्रा में दृश्य और श्रव्य दोनों प्रकार के गुण आ जाते हैं । इसी कारण एक आकर्षक चित्रा द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त समाचार कई हजार शब्दों वाले विशालकाय विवरण से भी अध्कि प्रभावशाली है । फोटो पत्राकारिता का विशेष महत्व टेलीविजन प्रसारण के लिए होता है, जिसके द्वारा आम जनता के सम्मुख घटना विध्यिों

तथा यथार्थता को चित्राात्मक रूप में दर्शाया जाता है । इस पत्राकारिता में फोटो खींचने का ज्ञान तथा समाचार चेतना का होना अत्यन्त आवश्यक है ।

विधि पत्राकारिता : विधि पत्राकारिता का उद्‌भव राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के दौर में हुआ । इस के अन्तर्गत देश के कानूनों, मौलिक अधिकारों, मानहानि, अदालत— अवमानना, अपमान—लेख, सार्वजनिक व्यवस्था, भारतीय डाक—तार अधिनियम, समुद्र सीमा शुल्क, पुस्तक पंजीयन नियम, कॉपीराइट अधिनियम आदि अनेक विधियां आ जाती है । विधि पत्राकार को सभी प्रकार की विधियों और कानूनों की जानकारी होनी चाहिए तभी वह इस प्रकार की पत्राकारिता में सफल हो सकता है । सन् १९६८ में प्रकाशित प्रथम विधि पत्रिाका 'उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्राकारिता' का प्रकाशन केन्द्रीय सरकार द्वारा किया गया । वर्तमान समय में अनेक विधि पत्रिाकाएँ प्रकाशित होने लगी है ।

व्याख्यात्मक पत्राकारिता : पत्राकारिता के प्रारम्भिक दौर में घटना को यथातथ्य प्रस्तुत करना ही पर्याप्त था। ऐसे में उसी संवाददाता को ही सफल माना जाता था, जो अनेक स्थानों पर भागदौड़ कर समाचारों तथ्यों और आंकड़ों को एकत्रित करके आम जनता तक पहुंचाता था । किन्तु बदली हुई परिस्थितियों में पाठक घटनाओं के मात्रा प्रस्तुतीकरण से संतुष्ट नहीं होता । वह कुछ 'और' भी जानने की इच्छा रखता है । इसी 'और' की संतुष्टि के लिए संवाददाता घटना की पृष्ठभूमि और कारणों की भी खोज करता है तथा वह समाचार का विश्लेषण कर पाठकों को घटना से जुड़े विविध मुद्‌दों के बारे में भी बतलाता है । हमारे देश में इस कार्य के लिए 'प्रैस ट्रस्ट ऑफ इंडिया', 'युनाइटेड न्यूज', 'इंडिया न्यूज एंड फीचर एलांएस', 'भाषा', 'यूनिवार्ता' आदि महत्वपूर्ण समाचार समितियां कार्य कर रही हैं । टाइम्स ऑफ इंडिया का 'छमेू ।दंसलेपेश व्याख्यात्मक पत्राकारिता का प्रतीक है ।

संसदीय पत्राकारिता : संसद तथा विधन सभाओं, परिषदों की कार्यवाही की रिपोर्ट में काफी सावधनी बरती जाती है । जरा सी असावधनी हो जाने पर संसद की अवमानना का प्रश्न उठ सकता है । संसद कार्यवाही प्रकाशन अधिनियम १९६५ को पूरी तरह समझ कर पत्रा—पत्रिाकाओं रेडियो, दूरदर्शन आदि के लिए प्रस्तुत करना इसका मुख्य लक्ष्य होता है ।

संदर्भ पत्राकारिता: संदर्भ पत्राकारिता में कार्यरत संपादकों, संवाददाताओं, प्रशासनिक अधिकारियों, लेखकों, साहित्यकारों तथा स्तम्भ लेखकों को उनकी आवश्यकतानुसार संदर्भ की आपूर्ति करते हैं । संदर्भ पत्राकार पत्राकारिता और पुस्तकालय विज्ञान में प्रशिक्षित विश्वकोश होता है जो पुरानी कतरनों, लेखों, सन्दर्भग्रंथों तथा चित्राों द्वारा उनकी सहायता करता है ।

खेल पत्राकारिता : मनोरंजन तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण खेलों के प्रति जन–जन की रूचि को देखते हुए पत्रा–पत्रिकाओं में खेलों के समाचार तथा उनसे सम्बन्धित नियमित स्तम्भों का प्रकाशन किया जाता है । हमारे संचार माध्यम खेल पत्रिका के विकास के लिए भरसक कोशिश करते हैं । अनेक दैनिक समाचार पत्रा इस दिशा में अपने खेल पृष्ठको खेल, खेल के मैदान से, खेल खिलाड़ी, खेल समाचार, खेलकूद आदि शीर्षकों से प्रकाशित करते है । आकाशवाणी द्वारा समय–समय पर खेलों का आंखों देखा हाल प्रसारित किया जाता है । दूरदर्शन पर समय–समय पर खेलों का सीध प्रसारण तो प्रति सप्ताह रविवार या निश्चित दूरदर्शन कार्यक्रम के अन्तर्गत 'वर्ल्ड ऑफ स्पोर्टस' कार्यक्रम दिखाया जाता है जिसमें सम्पूर्ण विश्व के खेलों के बारे मे जानकारी मिलती है । निसन्देह यह कदम देश में अनेक खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करेगा, विशेषकर उन प्रतिभावान युवा खिलाड़ियों को जिन्होंने आने वाले समय में खेलों का प्रतिनिध्त्वि व नेतृत्व करना है । 'खेल–खिलाड़ी', 'खेल युग', 'खेल हलचल', 'स्पोर्टस वीक' जैसी अनेक पत्रिकाएं इस पत्राकारिता को आगे बढ़ा रही है ।

शैक्षिक पत्राकारिता : शैक्षिक पत्राकारिता, पत्राकारिता का ऐसा उपेक्षित पक्ष है जिस पर समुचित ध्यान आज तक नहीं दिया गया है । यद्यपि पिछले सात–आठ वर्षों से एन.सी.ई. आर.टी. द्वारा इसे विकसित करने के लिए देश के अनेक अंचलों में उपयोगी गोष्ठियों और कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है ।

शिक्षा और पत्राकारिता एक स्तर पर दोनों के उद्देश्यों में समानता है । विभिन्न शैक्षिक संस्थानों द्वारा चलाई जा रही शैक्षिक प्रवृत्तियों, शिक्षा जगत की घटनाओं तथा शैक्षिक समस्याओं को जनसंचार माध्यमों के द्वारा जनता तक पहुंचाना शैक्षिक पत्राकारिता है । यह पत्राकारिता का एक सकारात्मक पक्ष है । जिसका समुचित विकास शिक्षा संस्थाओं में अंत:संबंध कायम करने का सशक्त माध्यम बन सकता है ।

रेडियो और दूरदर्शन पत्राकारिता : रेडियो पत्राकारिता के अन्तर्गत समाचार दर्शन, समाचार बुलेटिन, ध्वनि सम्पादन, समाचार वाचन, किसी घटना का आंखों देखा विवरण सुनाना आदि का समावेश होता है । फीचर, सामयिक विषयों की चर्चा के साथ–साथ कविता, कहानी, नाटक और व्यंग्य आदि लिखना भी रेडियो पत्राकारिता के अन्तर्गत आता है । रेडियों की भांति दूरदर्शन पत्राकारिता का भी कार्यक्षेत्रा होता है । रेडियों और दूरदर्शन में अंतर सिर्फ इतना है कि रेडियों पर हम जिस कार्यक्रम को केवल सुन सकते हैं दूरदर्शन पर उसको देख भी सकते हैं । पिछले बीस वर्षों में इस पत्राकारिता का पर्याप्त विकास हुआ है । दूरदर्शन

पत्राकार अपने साथ छायाकारों को ले कर चलता है जहाँ छायाकार चित्रा से तथा पत्राकार अपनी लेखन और वाचन कला से उसे रोचक और प्रभावशाली बनाता है ।

अन्तरिक्ष पत्राकारिता : आधुनिक काल में सूचना का आधर आकाशीयग्रह और उपग्रह बन चुके हैं । उपग्रहों के कारण संचार की दुनिया में क्रान्ति आ गई है । उपग्रहों के कारण ही एक ही समाचार पत्रा के कई संस्करण प्रकाशित हो रहे हैं । मुद्रण, सम्प्रेषण और प्रकाशन के क्षेत्राों में हो रहे परिवर्तन अन्तरिक्ष पत्राकारिता के अन्तर्गत आकर उसकी काया बदल रहे हैं ।

फिल्म पत्राकारिता : फिल्मों से हमारा समाज आज काफी प्रभावित है । अतः हमारी पत्राकारिता भी फिल्म से अछूती कैसे रह सकती है । फिल्मी—समीक्षा, फिल्मी कलाकारों के साक्षात्कार उनकी गतिविध्यिां एवं फिल्मों पर समीक्षात्मक लेख इत्यादि इस पत्राकारिता के प्रमुख पक्ष हैं । सिने पत्राकार मिर्च—मसाला लगा कर ऐसे कॉलमों को प्रस्तुत करते हैं और पाठक उन्हें चटखारे ले—ले कर पढ़ते हैं । आज हिन्दी अंग्रेजी भाषा में अनेक फिल्मी पत्रिाकाएं प्रकाशित हो रही हैं । 'फिल्मी दुनिया', 'फिल्मी कलिया', 'मायापुरी', 'स्टारडस्ट', 'सुषमा' आदि अनेक फिल्मी पत्रिाकाएं हैं जिनकी पाठक संख्या भी काफी अध्कि है ।

बाल पत्राकारिता : बाल्यकाल मानव जीवन की प्रारम्भिक अवस्था है, जिसमें व्यक्ति की समस्त शारीरिक और मानसिक क्षमताओं का आविर्भाव और विकास होता है । बालकों के उचित विकास के लिए बाल पत्राकारिता अत्यन्त उपयोगी है । चूंकि बच्चों में सीखने की अदम्य जिज्ञासा होती है और वे विश्व के प्रत्येक विषय के तथ्य को जानने हेतु ललायित रहते हैं। पत्राकार बालकों की रूचियों, प्रवृत्तियों और उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप पत्रा सम्पादित करते हैं । सम्पादन, चुटकलें, हास्य—व्यंग्य और कार्टून—कॉमिक्स के द्वारा बाल पत्राों को आकर्षक बनाया जा सकता है । इस क्षेत्रा में 'शिशु', 'बालक', 'पराग नंदन', 'चंदामामा', 'किशोर गुड़िया', 'बालभारती' इत्यादि अनेक पत्रिाकाएं प्रकाशित होती रही है। इसके अतिरिक्त दैनिक पत्राों के रविवारीय संस्करणों में 'बाल स्तम्भ' में बालोपयोगी सामग्री छपती है । वस्तुतः बाल पत्राकारिता सृजनात्मक पत्राकारिता है ।

वर्तमान में महिलाओं से सम्बन्धित अनेक पत्रिाकाएं भी प्रकाशित हो रही हैं । जिनमें 'मनोरमा', 'सखी', 'जान्हवी', 'गृहशोभा', 'गृहलक्ष्मी', 'वनिता' आदि के नाम लिये जा सकते हैं । महिला पत्राकारिता को सफल बनाने के लिए महिलाओं का कर्तव्य है कि वे जागरूक हो तथा समाज के जागरूक एवं ख्याति प्राप्त पुरूष पत्राकारों का भी कर्तव्य है कि महिलाओं के प्रगति के मार्ग में बाध्क बने नारी पुरुष असमानता के भेदभाव को दूर कर, उन्हें समुचित अध्किार व सुविधएं प्रदान करें ताकि महिला पत्राकारिता के क्षेत्रा का सम्पूर्ण विकास हो सके ।

सर्वोदय पत्राकारिता : श्री भवानी प्रसाद मिश्र ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा भावे की पत्राकारिता को सर्वोदय पत्राकारिता का नाम दिया है । इसके पत्राकार को अत्यन्त ध्ैर्य एवं संयम से काम लेना होता है । अपनेपन में किसी वर्ग, जाति, ध्र्म या सम्प्रदाय के प्रति किसी प्रकार का द्वेष रखे बिना वे सभी की उन्नति के लिए सोचते हैं और सर्वजनहिताय दृष्टिकोण से कार्य करते हैं । हिन्दी पत्राकारिता के गांधी युग में 'यंग इण्डिया', 'नवजीवन', 'हिन्दी नवजीवन', तथा 'हरिजन पत्रा' को भी सर्वोदय पत्राकारिता का उदाहरण कहा जा सकता है । धर्मिक संस्थाओं द्वारा विकसित धर्मिक और आध्यात्मिक पत्राकारिता को इसी के अन्तर्गत लिया जाना चाहिए ।

साहित्यिक पत्राकारिता : यह पत्राकारिता स्वयं में ज्ञान और शक्ति का एक विशिष्ट रूप है । बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से भारत में साहित्यिक पत्राकारिता का अनुपम विकास हुआ । 'सरस्वती' का शैक्षणिक पत्राकारिता के विकास में विशिष्ट योगदान रहा । हिन्दी क्षेत्रा में पत्रा–पत्रिकाओं में शिक्षा पर समय–समय पर श्रेष्ठ और उपयोगी सामग्री प्रकाशित होती रहती है । 'दिनमान', 'मासिक', 'साहित्य अमृत', 'दैनिक नवभारत टाइम्स', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'दिनमान', 'सारिका' आदि पत्रिकाएँ है । हिन्दी साहित्यिक पत्राकारिता का इतिहास लगभग १७० वर्षों का है किन्तु आज साहित्यिक पत्राकारिता संकटापन्न स्थिति में है ।

विज्ञापन पत्राकारिता : विज्ञापन व्यापार की आत्मा तथा समाचार पत्रा की अर्थव्यवस्था का आधर है । प्रचार से सम्बन्ध्ति जितनी भी सूचनाएं पत्रा–पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन आदि के माध्यम से प्रकाशित, प्रसारित और प्रदर्शित होती है । उन सब को विज्ञापन की श्रेणी में सम्मिलित किया जाता है । विज्ञापन को पत्राकारिता का मेरूदण्ड माना जा सकता है क्योंकि अध्किांश समाचार–पत्रा और पत्रिकाओं के पास नियमित और बहुसंख्यक ग्राहकों का अभाव रहता है इसी से विज्ञापन का महत्व बढ़ जाता है । समाचारपत्रा एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों को पांच वर्गों में बांटा जा सकता है । ;१द्ध वर्गीकृत विज्ञापन ;२द्ध आकस्मिक विज्ञापन ;३द्ध अनुबंध्ति विज्ञापन ;४द्ध प्रदर्शन विज्ञापन ;५द्ध फलक विज्ञापन ।

पीत पत्राकारिता : जब पत्राकारिता जैसे विषय में व्यक्तिगत लाभ या नाम कमाने की लालसा के रहते पत्राकारिता के सि(ान्तों का उल्लंघन किया जाता है तो यह पीत पत्राकारिता कहलाती है । हमारा दुर्भाग्य है कि अश्लील, हल्की, ओछी तथा सनसनीखेज खबरों के रूप में पीत पत्राकारिता आज भी हमारा पीछा कर रही है जो पत्राकारिता के महत्त उद्देश्य को पतित करती है ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पत्राकारिता के विविध पारम्परिक प्रकार है और समय के साथ—साथ नए बनते भी जा रहे हैं । इस पर हमें पुर्नविचार करना होगा । इसके लिए पत्राकारिता का दायित्व और भी बढ़ जाता है और पत्राकारिता के आदर्श का अन्त संवहन करने वाले सभी पत्रा—पत्रिाकाओं की भूमिका समाज के अग्रदूत के रूप में प्रशंसनीय है । सच तो यह है कि समाज में सक्रियता, सजीवता, नवसंचार, जागृति तथा गतिशीलता का संदेश देने वाली इस रचनाशील विध के बिना समाज को बदलना असम्भव है ।

संदर्भ ग्रंथ

प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित — जनपत्राकारिता जनसंचार एवं जनसम्पर्क
संजय प्रकाशन दिल्ली द्वितीय संस्करण २००९ ।
एन.सी. पंत—पत्राकारिता एवं संपादन कला
राध पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली द्वितीय संस्करण २००५ ।
डॉ. नरेश मिश्र, प्रयोजन मूलक हिन्दी
अभिनव प्रकाशन, दिल्ली ।
सुरेश गौतम, वीणा गौतम, हिन्दी पत्राकारिता—कल, आज और कल
सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ।